डार पात फल पेड़ में देख्यो सकल अकार।
भीखा दूसर गति भयो सुद्ध सरूप हमार ॥ ८ ॥

(४)

जोग जुक्ति कै हिंडोलवा गुरु सहज लखावल ॥ १ ॥
चाँदै राखि सूर पौढ़ावल* पवन डोरि धै पावल ॥ २ ॥
अर्ध उर्ध मुख पावल पुलकि पुलकि† छबि भावल॥ ३ ॥
गगन मगन गुन गावल सुरति निरति में समावल ॥ ४ ॥
भीखा यहि बिधि मन लावल आतम दरसावल ॥ ५ ॥

॥ बसंत ॥

(१)

जब गुरु दयाल तब सत बसंत ।
यहि सिवाय मत है अनंत ॥ १ ॥
श्री पंचमी है पाँच नारि ।
सम गावहिं इक सुर धमारि ॥ २ ॥
धुनि अकास भरि रहलि छाय ।
सुनत मगन उर नहिं समाय ॥ ३ ॥
धन्न भाग जा के यह सँजोग ।
मिल्यौ पदारथ अनँद भोग ॥ ४ ॥
जीव बुझायो ब्रह्म अंस ।
बकुला तें भयो परमहंस ॥ ५ ॥
माघ मकर तन सुफल जानि ।
मिल्यौ पदारथ नाम खानि ॥ ६ ॥

* बाईं स्वाँसा रोक कर दहिनी चलाई । † मगन होकर ।

नाद बिंद को जूह[*] होय ।
वे साहब ये सेवक जोय ॥ ७ ॥

सुन्न मँडल घर भयो भोर ।
सुद्ध सरूप चंद चित चकोर ॥ ८ ॥

भीखा मन मुक्ता चुगत आग ।
गुरु गुलाल जी के चरन लाग ॥ ९ ॥

(२)

खेलत बसंत रुचि अलखराय ।
रहनि निरंतर समय पाय ॥ १ ॥

नाम बीज फैलाव कीन्ह ।
जगत खेत भरि पबरि[†] दीन्ह ॥ २ ॥

जाम्यौ आँक[‡] अकार नेह ।
दिन दिन बढ़त करम सँदेह ॥ ३ ॥

पेड़ एक लगे तीन डार ।
ऊपर साखा बहु तुमार[§] ॥ ४ ॥

कली बैठि गुरु ज्ञान मूल ।
बिगसि बदन फूलो अजब फूल ॥ ५ ॥

फल प्रापत भयो रितु नसाय ।
परम जोति निज मन समाय ॥ ६ ॥

पक्क भयो रस अमी खानि ।
चाखत दृष्टि सरूप जानि ॥ ७ ॥

[*]समूह । [†]पबारना, छीटना । [‡]अँकुर । [§]तुमार, फैलाव ।

सोई आदि मध अंत सोइ ।
जीव पवन मन रह्यो न कोइ ॥ ८ ॥
सब्द ब्रह्म भयो सुन्न लीन ।
भीखा राति न तहवाँ दीन* ॥ ९ ॥

(३)

चेतत बसंत मन चित चेतन्य ।
जोग जुगति गुरु ज्ञान धन्य ॥ १ ॥
उरध पधार्‍यो पवन घोर ।
दृष्टि पलान्यो† पुरुब ओर ॥ २ ॥
उलटि गयो थकि मिटलि दाह‡ ।
पच्छिम दिसि कै खुलिल राह ॥ ३ ॥
सुन्न मंडल में बैठु जाय ।
उदित उजल छबि सहज पाय ॥ ४ ॥
जोति जगामग झरत नूर ।
ह्वाँ निसु दिन नौबति बजत तूर ॥ ५ ॥
झलक झनक जिव एक होय ।
मत प्रान अपान को मिलन सोय ॥ ६ ॥
रूह अलख नभ फूल्यो फूल ।
सोइ केवल आतम राम मूल ॥ ७ ॥
देखत चकित अचर्ज आहि ।
जो वह सो यह कहौं काहि ॥ ८ ॥
भीखा निज पहिचान लीन्ह ।
वह साबिक§ ब्रह्म सरूप चीन्ह ॥ ९ ॥

*दिन । † तैयार किया, कसा । ‡तपन । § प्राचीन ।

होली

(१)

होरी सो खेलै जा के सतगुरु ज्ञान बिचार ।
यहि सिवाइ जो और करतु है ता को जन्म खुवार ॥१॥
इँगल पिँगल ह्वै सुन्न भँटानो सुखमन भयो उँजियार ।
नूर जहूर बदन पर झलकत, बरखत अधर अधार ॥२॥
बाजत अनहद घंटा तहँ धुनि, अबिगत सब्द अपार ।
पुलकि पुलकि मन अनुभव गावत, पावत अलख दिदार ३
अजर अबीर कुमकुमा केसरि, उमगो प्रेम पोखार* ।
राम नाम रस रंग भयो, गत काम क्रोध हंकार ॥ ४ ॥
व्यापक पूरन अगम अगोचर, निज साहब बिस्तार ।
भीखा बोलत एक सभन में, है जग सकल हमार ॥५॥

(२)

जग नाम प्रकास अकार धरत जड़, आतम राम खेले होरी ।
कामक्रोधमदलोभग्रसितनर, आपु तँ आपु नरक बोरी १
तजि बिषया रत भक्ति भाव जहँ, ज्ञानध्यान रसरँग घोरी।
संत सभा चोआ अरु कुमकुम, प्रेम बचन छिरकत होरी २
सतगुरु हाथ बिकाय लियो, प्रभु दान दियो बंधन छोरी।
जोग जुक्ति अभ्यास भख्यौ, लै अर्ध उर्ध सुखमन भोरी ॥३
सुरति निरति लव लीन भयो, सम जीव सीव† दोनों जोरी
ब्रह्मसरूप अनूप दृष्टि भरि, निज प्रति देखि मिलो गोरी ४

*हौज़ । †जिसकी सेवा करता है, स्वामी ।

अगम अगोचर रूप झलाझलि, सोहं तार लगोरी ।
कहैं भीखा मेरो ऐसो साहब,मन माया अँखुवा* तोरी ॥५

(३)

ए हो होरी गाई, मधुर मधुर सुर राग चढ़ाई ॥टेक॥
समय सोहावन देखत मानो,
गयो बसंत फाग रितु आई ॥ १ ॥
तन मन धन चरनन पर वारो,
नाम प्रताप गगन धुनि छाई ॥ २ ॥
सुनत सुनत मन मगन भयो है,
सुरति निरति मिलि रास बनाई ॥ ३ ॥
हैाँ† तौ सरनागत माँगत हैां,
अब दीजै प्रभु संत दोहाई ॥ ४ ॥
जल थल जीव जहाँ लगि देखौ,
मन को बोध नहीं ठहराई ॥ ५ ॥
काया गढ़ के गगन भवन में,
धुधुकि धुधुकि धुन नाम सुनाई ॥ ६ ॥
भीखा को मन भ्रमत देखि कै,
गुरु गुलाल जी पंथ चढ़ाई ॥ ७ ॥

(४)

इक पुरुष पुरान चहूं जुग में,
मिलि आतम राम खेलै होरी ।

*अंकुर । †मैं ।

रंग लगो फगुवा रस बसि,
भयो माया ब्रह्म दुनों जोरी ॥ १ ॥
जग परिपंच करम अरुझे नर,
सबै कहत मोरी मोरी ।
नाम पदारथ भूलि गयो,
गल फाँस परी भ्रम की डोरी ॥ २ ॥
कोउ जोग जुक्ति रस भेद पाइ कै,
सुरति निरति लै रँग बोरी ।
बाजत अनहद ताल पखावज,
उमग्यौ प्रेम अनन* खोरी† ॥ ३ ॥
सतगुरु सब्द अबीर कुमकुमा,
भाव भर्यौ झोरी झोरी ।
भीखा दिब्य द्रिष्टि करि छिरकत,
पलकन नूर चुवत ओरी‡ ॥ ४ ॥

(५)

मन में आनँद फाग उठो री ॥ टेक ॥
इँगला पिँगला तारी देवै, सुखमन गावत होरी ॥ १ ॥
बाजत अनहद डंक§ तहाँ धुनि, गगन में ताल परो री २
सतसंगति चोवा अबीर करि, द्रुष्टि रूप लै घोरी ॥ ३ ॥
गुरु गुलाल जी रंग चढ़ायो, भीखा नूर भरो री ॥ ४ ॥

*एक ही का जिस में दूसरे की गुंजाइश नहीं है । †गली ।
‡ओलती, पानी की धार जो छत से गिरती है । §डंका ।

(६)

होरी खेलन जाइये, सत सुकरित साथ लगाई ।
यहि माया परपंच फागु में, मति कोइ परे भुलाई ॥१॥
सतगुरु ज्ञान अबीर रंग लै, हद भरि दमहिं चलाई ।
पाँच पचीस सखी जहँ चाचरि, गावहिं अनहद
डंक बजाई ॥ २ ॥
सुनत मगन मन पवन लसित भयो, सुरति
निरति अरुझाई ।
इंगल पिंगल पिचुकारी छोड़हिं, सुखमन रंग भिँजाई॥३
ब्रह्म सरूप चेतन्न नीर लै, दुरमति मैल बहाई ।
भीखा ता छबि कहहि कौन मुख, एकौ जुक्ति न आई ॥४

(७)

आनँद उठत झकोरी फगुवा, आनँद उठत झकोरी।टेक।
अनहद ताल पखावज बाजै, मनमत राग मरोरी॥१॥
काया नगर में होरी खेल्यो, उलटि गयो तेहिं खोरी॥२
नैनन नूर रंग भरि उमग्यौ, चुअत रहत निज ओरी॥३
गुरु गुलाल जी दाया कीन्हो, भीखा चरन लगो री ॥४॥

(८)

हरि नाम भजन हठ कीजै हो, स्वाँसा ढरकत रंग भरी
हो होइ समय जात मानो गनि गनि, सिर पर
ठोकत काल घरी ॥ टेक ॥
फगुवा जग भकुवा खेलतु है, स्वारथ रत होरी परी।
परमातम चेतन्न आतमा आइ सरूप गयो छरी* ॥१॥

*छल जाना ।

कहत है बेद बेदांत संत को, साँच भक्ति बिनु भव तरी।
परमारथ गुरु ज्ञान अनादर, लोक लाज कुल को डरी॥२॥
जुग बरस मास दिन पहर घरी छिन, तन पर
आय चढ़ी जरी।
बात कफ्फ पित कंठ गहो है, नैनन नीर लगो झरी॥३॥
बिसर्‌यो गथ* अब सान बुझावत, जहँ जहँ बस्तु रही धरी।
हाहाकार करत घर पुर जन, थकित भयो का कहि करी॥४
चतुर प्रवीन बैद कोउ आवो, हाथ उठा देखो नरी†।
भीखा बूझत कहत सबै अब, राम कृस्न बोलो हरी॥५॥

(९)

जाके केवल नाम अधार होरी रंग भरी।
दुबिधा भाव पखंड तजो है सतगुरु बचन अधार।
यहि बिधि सुद्धि करी॥१॥
तन मन वारि चरन पर दीन्हो पवन जोर बरियार।
जोग जुक्ति अवराध कठिन सुठि निपट खरग कै धार।
सनमुख लरी मरी॥२॥
सुन्न रैन बिच भोर भयो उठि चेतन करत बिचार।
प्रेम पदारथ प्रगट भयो जब ज्ञान अगिन धधकार
देखत जरी बरी॥३॥
आतम राम अखंडित पूरन ब्रह्म सरूप अकार।
भीखा भाग कहाँ लगि बरनौं जाहि मिले करतार।
धन्य सोई घरी॥४॥

*बोल। †नाड़ी।

(१०)

धनि फाग खेलन सो जाय, निज पिया पाइ कै ।
नाहीं तौ बैठि तेवान* करै वह रंग करम दुखदाय ।
लावो न भुलाइ कै ॥ १ ॥
भरम भयंकर वार पार नहिं, कर मींजत पछिताय ।
हर दम उठत मरोर हिये, जनु कहे कोउ पिय तुम आय ।
धरो पगु धाइ कै ॥ २ ॥
यहि अंतर सुपना निसु बाती, सोहं आपु जनाय ।
बूझत अरथ बिचार यहै सखि, आपा पति अपनाय ।
मिलो मुसकाइ कै ॥ ३ ॥
सतगुर धन्य जो कह्यो अगुवने, सो अब कृपा जनाय ।
भीखा अलख को लखो कहा, वहँ मन बुधि चित न समाय ।
गावो का बजाइ कै ॥ ४ ॥

कबित्त

(१)

कोउ जजन† जपन कोउ तीरथ रटन,‡
ब्रत कोउ बन खंड कोउ दूध को अधार है ।
कोउ धूम पानि§ तप कोउ जल सैन लेवै,
कोउ मेघडम्बरी‖ सो लिये सिर भार है ॥

*फ़िकूर । †यज्ञ । ‡घूमना । §धुवाँ पीना अर्थात गाँजा पीना ।
‖बड़ा छाता ।

कोउ बाँह को उठाय ढढ़ेसुरी कहाइ जाय,
कोउ तौ मवन[*] कोउ नगन[†] बिचार है।
कोउ गुफाही में बास मन मोच्छही की आस,
सब भीखा सन्त सोई जा के नाम को अधार है॥

(२)

कोउ प्रानायाम जोग कोउ गुन गावै लोग,
कोउ मानसिक पूजा करे चित चेतना।
कोउ गीता भागवत कोउ रामायन मन,
कोउ होम यज्ञ करे बिधि बेद कहे जेतना॥
कोउ ग्रहन में दानकोउगंगा अस्नान,
कोउ कासी ब्रह्मनाल[‡] वे फलही के हेतना[§]।
भीखा ब्रह्म-रूप निज आतमा अनूप,
जो न खुल्यो दिव्य द्रृष्टि खाली कियो
भ्रम एतना॥

(३)

राम नाम जाने बिना बृथा है सकल काम,
जैसे नटिनी को नाट[‖] पेखनी को पेखना[¶]।
गुरु जी से ज्ञान लेवे चरनौं मैं चित्त देवे,
मानुष की देही येही जीवन को लेखना॥

[*]चुप। [†]नंगे। [‡]काशी में एक अस्थान का नाम। [§]अभिप्राय से। [‖]चरित्र। [¶]देखने भर का खेल है।

ताखी* औ तिलक भाल सेल्ही औ तूमर† माल
मोर पच्छ पच्छ बाद सुद्ध रूप भेखना।
भीखा दिव्य दृष्टि आपु जपत अजपा जाप,
आपुही को आपु सो तो आपुही में देखना॥

(४)

पुरुष पुरान आदि दूसरो न माया बादि,
बोले सत्त सब्द जा में त्रिगुन पसार है।
बीज बढ़ो है तुमार‡ चर अचर बिचार,
ता में मानुष सचेत औ चेतन अधिकार है॥
सतगुरु मत पाय निज रूप ध्यान लाय,
जनम सुफल साँच ता को अवतार है।
गगन गवन करै अनहद नाद भरै,
सुंदर सरूप भीखा नूर उँजियार है॥

(५)

जा कै ब्रह्म दृष्टि खुलो तन मन प्रान तुलो,
धन्य सोई संत जा के नाम की उपासना।
ज्ञानिन में ज्ञान वोई अनुभव फल जोई,
तजै लोक लाज जा में काल जाल साँसना॥
प्रेम पंथ पग दियो उरध में घर कियो,
मन निर्गुन पद छुटै जग बासना।
जोग की जुगति पाय सुरति निरति लाय,
नाद बिंद सम भीखा लायो दृढ़ आसना§॥

*साधुवों की नोकदार टोपी। †तुम्बा। ‡बहुत। §आसन।

(६)

आदि अंत मध्य एक नाद बिंद सम पेख,
सब घट सुद्ध ब्रह्म दीखत ज्यौं अकास है ।
काहे को भरम करै जनमि जनमि मरै,
भजत न हठ करि जौ लौं तन साँस है ॥
निज सुख येही जानो दुबिधा न भाव आनो,
अलख अलेख देखो आपुही मैं बास है ।
चित्त ज्यौं चकोर लेवै चंद्रमा को दृष्टि देवै,
आत्मा प्रकासी ज्ञान भीखा निज पास है ।

(७)

ज्ञान अनुमान करि चीन्ह ले अमान धरि,
गुरु परताप खुलो भरम कपाट है ।
चाँद सूर एक सम सुरति मिलाय दम,
इँगल पिँगल रँग सुखमन माट है ॥
पूरब पवन जोग पच्छिम की राह होय,
गंग जमुन संगम तहँ त्रिकुटी को घाट है ।
प्रान औ अपान असमान ही में थिर होवे,
भीखा सब्द ब्रह्म को अकास सुन्न हाट* है ॥

(८)

भूलो हाट ब्रह्म द्वार काम क्रोध अहंकार माहिँ,
रहत अचेत नर मन माया पागो है ।

*बाज़ार ।

अलख अलेख रूप आत्मा है भेख धरे,
कस न पुलकि* जीव ताही पंथ लागो है ॥
अकथ अगाध वोई अनुभव फल जोई,
निसु महा भोर मानो सोय उठि जागो है।
बाजै अनहद मारू उभै दल मोच्छ झारू,
सूरा खेत माँड़ि रहो भीखा कूर† भागो है ॥

(९)

कूर† है खजूर छाया संचै‡ बपु§ झूँठी माया,
ग्रसइ रहत यह जगत को हाल है।
मन परतीत करै सत औ संतोष धरै,
नाम जपै हर दम दमहिं को माल है ॥
साधन को संग जहाँ नाना परसंग तहाँ,
अर्थ नवीन सुनि जागो भाग भाल‖ है।
धन्य आपु भेद पाय दीन्हो और को बताय,
भीखा गुरु जीव राम नाम तौ गुलाल है ॥

(१०)

बालक सौं भयो ज्वान दारा सुत ध्यान प्रान,
समय गये तैं फल लागो भूख रूख है।
करम धरम जप तीरथ रटत¶ तप,
राम नाम जाने बिना कन** तुख†† खूख‡‡ है ॥

*उमंग से। †कादर। ‡ रक्षा करता है। §शरीर । ‖माया।
¶घूमता है। **छाँटन । †† भूसी। ‡‡छूछी।

विषै विभव बिलास तूल बड़ा आस पास,
सत औ संतोष नाहिं सबै सुख दुक्ख है ।
जगत समुद्र माहिं नर तन नाव परी,
भीखा कनहरि* गुरु पार मुक्ख मुक्ख है ॥

(११)

राम जी सौं नेह नाहीं सदा अबिबेक माहीं,
मनुवाँ रहत नित करत गलगौज† है ।
ज्ञान औ बैराग हीन जीवन सदा मलीन,
आत्मा प्रगट आपु जानि ले भा नौज है ॥
साहब सौं कौल छूटी काम क्रोध लोभ लूटी,
जानि कै बँधायो मीठी बिषै माया फौज है ।
साहब की मौज जहाँ भीखा कीन्ह मौज तहाँ,
साहब की मौज जोई सोई मौज मौज है ॥

(१२)

खुद एक भुम्मि‡ आहि बासन§ अनेक ताहि,
रचना बिचित्र रंग गढ़्यो कुम्हार है ।
नाम एक सोन आस‖ गहना है द्वैत भास,
कहूं खरा खौंट रूप हेमहिं¶ अधार है ॥
फेन बुद्बुद अरु लहरि तरंग बहु,
एक जल जानि लीजै मीठा कहूं खार है ।
आत्मा त्यौं एक जाते** भीखा कहै याहि मते,
ठग सरकार के बटोही†† सरकार कै ॥

*पतवार पकड़ने वाला । †हल्ला । ‡मिट्टी । §बरतन । ‖ग्रस ।
¶सोना । **एक ही जाति की । ††मुसाफ़िर ।

(१३)

एक नाम सुखदाई दूजो है मलिनताई,
जिव चाहहु भलाई तौ पै राम नाम जपना ॥
तात मात सुत बाम* लोग बाग धन धाम,
साँच नाहीं झूँठ मानो रैनि कै सुपना ॥
माया परपंच येहि करम कुटिल जेहि,
जनम मरन फल पाप पुन्न तपना ।
बोलता है आप ओई जेते औतार कोई,
भीखा सुद्ध रूप सोई देखु निज अपना ॥

(१४)

निरमल हरि को नाम सजीवन,
धन सो जन जिन के उर फरेऊ ।
जस निरधन धन पाइ संचतु है,
करि निग्रह किरपिनि मति धरेऊ ॥
जल बिनु मीन फनी† मनि निरखत,
एकौ घरी पलक नहिं टरेऊ ।
भीखा गुँग औ गूड़ को लेखा,
पर कछु कहे बने ना परेऊ ॥

(१५)

गये चारि सनकादि पिता‡ लोक आदि धाम,
किये परनाम भाव भगति दृढ़ायऊ ।
पूँछ्यो हँसि प्रीति भाव माया ब्रह्म बिलगाव,
बिधि जग व्यौहारी प्रति उत्तर न आयऊ ॥

*स्त्री। †साँप। ‡ब्रह्मा।

किये बहुत समास भयो अरथ न भास,
हरि हरि सुमिरन ध्यान आरत सुनायऊ ।
प्रभु हंस तन लियो द्विज दरसन दियो,
भीखा अज* सनकादि कर जोरि माथ नायऊ ॥

॥ रेख़ता ॥

(१)

पाप औ पुन्न नर झूलत हींडोलना,
ऊँच अरु नीच सब देह धारी ।
पाँच अरु तीनि पच्चीस के बस परो,
राम को नाम सहजै बिसारी ॥
महा कवलेस† दुख वार अरु पार नहिं,
मारि जम दूत दैं त्रास भारी ।
मन तोहिं धिरकार धिरकार है तोहिं,
धृग बिना हरि भजन जीवत भिखारी ॥

(२)

करो बीचार निर्धार‡ अवराधिये§,
सहज समाधि मन लाव भाई ।
जब जक्त की आस तें होहु निरास,
तब मोच्छ दरबार की खबरि पाई ।
न तो भर्म अरु कर्म बिच भोग भटकन लग्यो,
जरा अरु मरन तन बृथा जाई ।

*ब्रह्मा । †क्लेश, कष्ट । ‡निरंतर । §आराधना करो ।

भीखा मानै नहीं कोटि उपदेस सठ,
धक्यो वेदांत जुग चारि गाई ॥

(३)

भयो अचेत नर चित्त चिंता लग्यो,
काम अरु क्रोध मद लोभ राते।
सकल परपंच में खूब फाजिल हुआ,
माया मद चाखि मन मगन माते ॥
बढ़्यो दीमाग मगरूर हय गज* चढ़ा,
कह्यो नहिं फौज तूमार† जाते।
भीखा यह ख़्वाब की लहरि जग जानिये,
जागि करि देखु सब झूँठ नाते ॥

(४)

झूँठ मेँ साँच इक बोलता ब्रह्म है,
ताहि को भेद सतसंग पावे।
धन्य सो भाग जो सरन सेवा टहल,
रात दिन प्रीति लवलीन लावे ॥
बचन लै जुक्ति सोँ सिद्धि आसन करै,
पवन सँग गवन करि गगन जावै।
प्रगट परभाव गुरु गम्य परचो इहै,
भीखा अनहद्द पहिले सुनावे ॥

(५)

दूजे वह अमल दस्तूर दिन दिन बढ़्यो,
घटा अँधियार उँजियार भाया।

*घोड़ा हाथी। †गिनती, बिस्तार।

अर्ध से उर्ध भरि जाप अजपा जप्यो,
चाँद अरु सूर मिलि त्रिकुटि आया ॥
झरत जहँ नूर जहूर असमान लौं,
रूह अफताब* गुरु कीन्ह दाया ।
भीखा यह सत्त सो ध्यान परवान है,
सुन्न धुनि जोति परकास छाया ॥

(६)

सब्द परकास के सुनत अरु देखते,
छूटि गइ बिषै बुधि बास काँची ।
सुरति गै निरति घर रूप अयो† दृष्टि पर,
प्रेम की रेख परतीत खाँची ॥
आतमा राम भरिपूर परगट रह्यो,
खुलि गई ग्रंथि‡ निज नाम बाँची ।
भीखा यौं पगि गयो जीव सोइ ब्रह्म मैं,
सीव अरु सक्ति की मिलन साँची ॥

(७)

सकल बेकार की खानि यह देँहि है,
मल दुर्गंध तेहि भरो माहीं ।
मन अरु पवन यह जोर दोनौं बड़े,
इन को जीत कै पार जाहीं ॥
जाहि गुरु ज्ञान अनुमान अनुभव करै,
भयो आपु आप मिलि नाम पाहीं ।

*सूरज । †आयो । ‡गाँठ ।

भीखा आधार आपार अद्वैत है,
समुँद अरु बुंद कोइ और नाहीं ॥

(८)

जहाँ तक समुँद दरियाव जल कूप है,
लहरि अरु बुन्द को एक पानी ।
एक सूबर्न* को भयो गहना बहुत,
देखु बीचार सब हेम खानी† ॥
पिरथवी आदि घट रच्यो रचना बहुत,
मिर्तिका‡ एक खुद भूमि जानी ।
भीखा इक आतमा रूप बहुतै भयो,
बोलता ब्रह्म चीन्है सो ज्ञानी ॥

(९)

ब्रह्म भरि पूर चहुं ओर दसहूं दिसा,
भाव आकासवत नाम गहना ।
अजर सो अमर आबरन अबिगति सदा,
आत्मा राम निज रूप लहना ॥
सत्त सों एक अवलँब करु आपनो,
तजो बकवाद बहु फुहस§ कहना ।
भीखा अलेख को देखि कै मिलि रहो,
मुष्टिका‖ बाँधि चुप लाइ रहना ॥

*सोना । †सब की निकासी सोना से है । ‡मिट्टी । §झूंठी या फूहर बात । ‖मुट्ठी ।

॥ मिश्रित ॥

॥ शब्द १ ॥

अगह तुम्हरो न गहनाहै। अकह तुम कहा कहना है॥१॥
सब्द अरु ब्रह्म अधिकारी। चेतन तुम रूप तन धारी ॥२॥
अबिगति तुम्हरी न गति पावै। कहाँ अस ज्ञान बुधि आवै
तुम्हरो कहिं वार नहिं पारा। केतो अनुमान करि हारा ४
अगम का गम कवन पावे। जहाँ नहिं चित्त मन जावे ५
प्रगट तुम गुप्त सब माहीं। बियापक तुम कहाँ नाहीं॥६॥
सुनहु सब की कहहु सब से। देखहु सब को मिलो तन से ७
जहाँ लगि सकल हौ तुमहीं। धोख यह बीच हम हमहीं ८
छुटै जब तैं व मैं मेरा। तहाँ ठाकुर न कोउ चेरा ॥९॥
केवल सोइ आपु आपै हो। दुइत सोइ जाय जापै हो॥१०॥
उभै* हम एक ही तुम हीं। हमैं तुम्हैं भेद कम कमहीं॥११॥
भीखा तजो भरम के ताईं। चीन्हो निज आपनो साईं १२

॥ शब्द २ ॥

रखो मोहिं आपनी छाया। लगै नहिं रावरी माया ॥१॥
कृपा अब कीजिये देवा। करौं तुम चरन की सेवा २
आसिक तुझ खोजता हारे। मिलहु मासूक आ प्यारे॥३॥
कहौं का भाग मैं अपना। देहु जब अजप का जपना ॥४॥
अलख तुम्हरो न लख पाई। दया करि देहु बतलाई ॥५॥

*दो।

वारि वारि जावँ प्रभु तेरी। खबरि कछु लीजिये मेरी॥६॥
सरन में आय मैं गीरा। जानो तुम सकल पर* पीरा॥७॥
अंतरजामी सकल ढेरो† । छिपो नहिं कछु करम मेरो॥८॥
अजब साहब तेरी इच्छा। करो कछु प्रेम की सिच्छा॥९॥
सकल घट एक ही आपै। दूसर जो कहै मुख का पै॥१०॥
निर्गुन तुम आप गुन धारी। अचर चर सकल नर नारी११
जानौं नहिं देव मैं दूजा। भीखा इक आतमा पूजा॥१२॥

॥ शब्द ३ ॥

भजन साईं का कर तू खूब, नहीं तो काल मारेगा॥१॥
जुक्ति गुरु ज्ञान है आजूब, लखत दिल दौरि‡ हारेगा॥२॥
तुझी में आपु है महबूब, सोई आप और तारेगा॥३॥
अनाहद बाजता है झूम, सुनत मन पवन धारेगा॥४॥
समाधी सहज लावो तुम, परम पद को सिधारेगा॥५॥
काम अरु क्रोध करते धूम, बिना प्रभु को उबारेगा॥६॥
रमिता रमी एकवहु भूमि, भीखा आतम बिचारेगा॥७॥

॥ शब्द ४ ॥

जानो इक नाम को भाई, और का कौन लेखा है॥१॥
दृष्टि का भेद नहिं पाई, कहो केहि ताहि देखा है॥२॥
सुभग तन मानुखा जाई, भजो दिन जेइ सेषा है॥३॥
गुरू जब भेद बतलाई, सोई जन आपु पेखा है॥४॥
सब्द अरु ब्रह्म सुखदाई, सकल घट नाम लेखा है॥५॥

*पराई। †घट घट में व्यापक। ‡दौड़ कर।

निर्गुन औ सगुन समताई, सोई जग रूप भेषा है॥६॥
अलख का लखन कठिनाई, करम को मार मेखा है॥७॥
कपट मन आस दुखदाई, लिखा भीखा जो रेखा है॥८॥

॥ शब्द ५ ॥

सत्य गहै इक नाम को सोइ संत सयाने।
मन क्रम बचन बिचारि कै दूजो नहिं जानै ॥ १ ॥
जोग जुक्ति गुरु ज्ञान में जिन चित अरुझाने।
पाप अरु पुन्य करम कहा सुभ असुभ हिराने* ॥ २ ॥
अगम अगोचर रूप है फल आनि तुलाने।
प्रेम सुधा रस भावनो जन चाखि लुभाने ॥ ३ ॥
सब्द प्रकास सहज भयो चित चकित भुलाने।
भीखा सुनि तिन देखेऊ बिन आँखिहिं काने ॥ ४ ॥

॥ शब्द ६ ॥

काह भये गुरुमुख भये, दिल साँच न आया।
काम क्रोध के बसि परे, झूँठी मन मांया ॥ १ ॥
अपनी कपट कुचाल तेँ, नाना दुख पावै।
करम भरम डर बीच में सिंह स्यार कहावै ॥ २ ॥
अमृत तजि बिष खातु है, ताको का कीजै।
निज दाँतन रसना कटै, दोस केहि दीजै ॥ ३ ॥
ज्ञान हीन औगति भयो, मरि नरकहिं जाई।
ता में चित चेतन करै, केहि कामै आई ॥ ४ ॥

*खो गये।

लौंड़ी पूँछै पिया हौं, कहि भेद सुनाया ।
सिर के साँटे* करार कियो, खोजि ताहि लै आया॥५॥
साहब अलख अलेख है, गति लखहि न कोई ।
भीखा निस्चै राम की, इच्छा से होई ॥ ६ ॥

॥ शब्द ७ ॥

सो हरि जन जो हरि गुन गैनो ।
मन क्रम बचन तहाँ लै लावै, गुरु गोबिंद को पैनो॥१॥
ता पर होहिं दयाल महा प्रभु, जुक्ति बतावैं सैनो ॥२॥
बूझि बिचारि समझि ठहरावत, तुरत भयो चित
चैनो ॥ ३ ॥
काम क्रोध मद लोभ पखेरू, टूटि जात तब डैनो† ॥४॥
आतम राम अभ्यास लखन करि, जब लेवे निज ऐनो‡॥५
ब्रह्म सरूप अनूप की सोभा, नहिं कहि आवत बैनो§ ।
भीखा गुरु गुलाल सिर ऊपर, देखत है बिनु नैनो ॥६॥

॥ शब्द ८ ॥

देखो प्रभु मन कर अजगूता‖ ॥ टेक ॥
राम को नाम सुधा सम छोड़त बिषया रस लै सूता॥१॥
जैसे प्रीति किसान खेत सौं दारा धन औ पूता ॥२॥
ऐसी गति जो प्रभु पद लावै सोई परम अवधूता ॥३॥
सोई जोग जोगेसुर कहिये जा हिये हरि हरि हूता¶॥४॥
भीखा नीच ऊँच पद चाहत मिलै कवन करतूता ॥५॥

*बदले । †पर । ‡दर्पन । §कहने में । ‖अचरज खेल । ¶होता या उठता है ।

॥ शब्द ९ ॥

मन मोर बड़ अवरेबिया* ।
हरि भजि सुख नहिं लेत, मन मोर बड़ अवरेबिया ॥टेक॥
दिव्य दृष्टि नहिं रूप निरेखत, नूर देत बहु जेबिया† ॥१॥
सतगुरु खेत जोति लै बोवल, भीखा जम लियो
हिसबिया ॥ २ ॥

॥ शब्द १० ॥

राम नाम भजि लीजै भाई ॥ टेक ॥
देखु बिचारि दूसर कोउ नाहीं,
हितु अपनो हरि कीजै जाई ।
जग परपंच सकल भ्रम जानो,
नाम रंग भीँजै सुखदाई ॥ १ ॥
संतन हाट बिकाय बस्तु सो,
नाम अमोल लीजै अनकाई‡ ।
सो धन धन्य उदार तियागी,
खरचत नहिं छीजै अधिकाई ॥ २ ॥
तजि कर्म सकल भजु दृढ़ मत धरि,
मरिये भा जीजै§ मन लाई ।
अगम पंथ को चलना है मन,
छाँड़ि दीजै अलसाई ॥ ३ ॥

*फ़रेबी । †ज़ेब, शोभा । ‡आँक या जाँच कर । §चाहे मरे चाहे जिये ।

जहँ लग तहँ लग एक ब्रह्म है,
का सोँ सीखीजै* अतमाई† ।
खोजत खोजत हारि गयो सब,
थाके सकल किनहुं नहिं पाई ॥ ४ ॥
काम क्रोध मद लोभ तजो तुम,
हरि हर दम लीजै गाई ।
जन भीखा वै धन्य साधु जो,
नाम अमल पीवैँ छकियाई ॥ ५ ॥

॥ शब्द ११ ॥

तू ज्ञानी जना देखहु आपै आपु बना ॥ १ ॥
आपु बिना आपन नहिं कोई समझहु बूझि बिचारि तना ॥ २ ॥
अगम अगोचर बसत निरंतर साहब एक अनंत घना ॥३॥
मन क्रम बचन जो हरि रँग राते सो अब करैँ कर्म कवना॥४॥
(भीखा) ब्रह्म सरूप प्रगट पर अनहद‡ बड़ा तासु मिलना॥५॥

॥ शब्द १२ ॥

करि करम हरिहिं पर वारो, फल सानो§ ना ॥ १ ॥
प्रभु मिलन हेतु प्रगटानो, केहु मानो ना ॥ २ ॥
सब साहब आपुइ अपनो, केहु जानो ना ॥ ३ ॥
प्रभु अनहद धुनि घहरानो, केहु कानो‖ ना ॥ ४ ॥
प्रभु प्रेम भक्ति को बानो, केहु ध्यानो ना ॥ ५ ॥

*सीखिये । †आत्म ज्ञान । ‡कठिन । §मिलावो । ‖सुनो ।

प्रभु ब्यापक पुरुष पुरानो, केहु ज्ञानो ना ॥ ६ ॥
मन भीखा भर्म भुलानो, पहिचानो ना ॥ ७ ॥

॥ शब्द १३ ॥

तुम जानहु आतम रामा अपनो हित कै ॥ टेक ॥
ज्ञान ध्यान बैराग सुदृढ़ तेहिं प्रेम भक्ति सुख धामा,
गायो गित* कै ॥ १ ॥
सुमिरन भजन बिचार में रत तेहिं, क्रोध होय गत कामा,
इन्द्री जित कै ॥ २ ॥
हरि सौं प्रीति निरंतर जाकी, निस दिन आठो जामा,
भजनो नृत कै ॥ ३ ॥
पाप औ पुन्न अधर्म धर्म किये, ऊँच नीच तन खामा,
जन्मै तित कै ॥ ४ ॥
भीखा मन निग्रह† नहिं तब लौं, जिव न लहै बिस्रामा,
चिंता चित कै ॥ ५ ॥

॥ शब्द १४ ॥

मन अनुरागल हो सखिया ॥ टेक ॥
नाहीं संगत औ सो ठकठक, अलख कौन बिधि लखिया १
जन्म मरन अति कष्ट करम कहँ, बहुत कहाँ लगि भँखिया २
बिनु हरि भजन को भेष लिये, कहा दिये तिलक
सिर तखिया‡ ॥ ३ ॥
आतम राम सरूप जाने बिन, होहु दूध कै मखिया ॥ ४ ॥

*गीत । †शांत । ‡साधुओं की टोपी ।

सतगुरु सब्दहिं साँचि गहो, तजि झूँठ कपट मुख भखिया५
बिन मिलले सुनले देखले बिन, हिया करत सुर्ति अँखिया६
कृपा कटाच्छ करो जेहिं छिन भरि कोर तनिक
इक अँखिया ॥ ७ ॥
धन धन सो दिन पहर घरी पल, जब नाम सुधा
रस चखिया ॥ ८ ॥
काल कराल जंजाल डरहिं गे, अबिनासी की धकिया*९॥
जन भीखा पिया आपु भइल, उड़ि गैलि भरम की
रखिया† ॥ १० ॥

॥ शब्द १५ ॥

ना जानौं प्रभु का धौं रंग रचो री ॥ टेक ॥
ज्यौं कुम्हार का चाक फिरावत यहि जग खंभ लगो री १
जोई जोई रँग खानि खानि को सोइ सोइ सब्द करो री२
यहि तन खेल तिकठिया लागो गोटी खूँटि‡ धरौ री३॥
काम क्रोध दुनो लगे दुकठिया तिकठा खेल उठो री ॥४॥
कह भीखा मोहिं सरन राखिये माँगत हौं कर जोरी ॥५॥
अबकी बार दुकठिया छूटे तुम लायक यहि थोरी§ ॥६॥

॥ शब्द १६ ॥

सब्द कै उठंल मनोरवा‖ हो, अनहद धुनि घहराई ॥१॥
सुनत सुनत चित लागल हो, दिन दिन रुचि अधिकाई २

*धाक, प्रताप। †राख। ‡किनारे। §तुम्हारे लिये यह ज़रा सी बात है। ‖एक राग का नाम।

मन अनुमान मनोरवा हो, सुरति निरति अरुझाई ॥३॥
सब्द प्रकास मनोरवा हो, दिव्य द्रृष्टि दरसाई ॥४॥
सुद्ध सरूप मनोरवा हो, सतगुरु दिहल लखाई ॥५॥
भीखा हंस मनोरवा हो, छीर नीर बिलगाई ॥६॥

॥ शब्द १७ ॥

सत्त सब्द ऊठन लगो, अनुभौ कछु बरनि न जाई १
आनँद अगम उमँग भयो, ता पद जिव लागो लव लाई २
सुनत सुनत तन तपन गई, छुटि गइ जग करम बलाई ३
नाद बिंद को जूह भयो, मनुवाँ तहँ रहल लुभाई ४
पिरथी गगन इक सम भयो, आपै वहि त्रिभुवनराई ५
दूसर द्रृष्टि न आवई, सोइ भीखा चरन समाई ॥६॥

॥ शब्द १८ ॥

राम नाम भजि ले मन भाई ।
काहे कै रोस* करहु घरही में, एकै तुम हमरे पितु माई १
देखहु सुमति संग कै भायप†, छिमा सील सँतोष समाई ।
एकै रहनि गहनि एकै मति, ज्ञान बिबेक बिचार सदाई २
होहु परम पद के अधिकारी, संत सभा महँ बहुत बड़ाई ।
कुमति प्रपंच कुचाल सकल यह, तुम्हरी देखि बहुत मुसकाई
अब तुम भजहु सहाय समेतो, पाँच पचीस तीन समुदाई‡।
तुम अनादि सुत बड़े प्रतापी, छोट कर्म करि होहि हँसाई ४

*क्रोध, लड़ाई । †भैयादी, भाई बंदी । ‡इकट्ठा करके ।

तुम मोहिं कीन्ह हाल को गेदो[*], इत उत यहँ भरमाई ।
तेहिं दुख सुख को अंत कहै को, तन धरि धरि मोहिं बहुत नचाई ॥५॥
अब अपनी उनमेख[†] तजन की, सपथ[‡] करी दृढ़ मोहिं सोहाई ।
जन भीखा कै कहा मानु अब, मन तोहिं राम कै लाख दोहाई ॥६॥

॥ शब्द १९ ॥

जोग जुक्ति गुरु लगन लगाई ।
साजि बरात बियाहन जाई ॥ १ ॥
उर्ध पवन मन धुजा बिराजै ।
सुतरी[§] अस्पी[||] अनहद बाजै ॥ २ ॥
नरसिंघा[¶] तुरही[¶] सहनाई ।
घंटा धुनि अंबर[**] पर छाई ॥ ३ ॥
पालकी सुरति निरति लौ लीना ।
लागे पाँच कहार प्रबीना ॥ ४ ॥
अठकठ[††] साज बरनि नहिं जाई ।
संगी सो इक एक सोहाई ॥ ५ ॥
अचरज एक जु देखा भली ।
दुलहिन खोजन पिय को चली ॥ ६ ॥

---

* बच्चा । † अभिमान । ‡ क़सम । § ऊँट पर का डंका । || घोड़े पर का डंका । ¶ बाजों के नाम । ** आकाश । †† आठ काठ का ।

सुन्न सिखर पर माँडो छायो ।
इँगला पिँगला चौक पुरायो ॥ ७ ॥
प्रेम प्रीति कै साज सजाई ।
कुंभक पूरक कलस भराई ॥ ८ ॥
गावहिं पाँच पचीसो गुनी ।
सुनत मगन ह्वैँ साधू मुनी ॥ ९ ॥
सैँदुर उदित जोति जगमगे ।
आपन नाह* आपु से पगे† ॥ १० ॥
दुलहिन नाम सेव करि पाई ।
नाद बिंद बहुतै भौजाई ॥ ११ ॥
भीखा मगन रहे हर हाल ।
तजि परपंच जगत को ख्याल ॥ १२ ॥

॥ शब्द २० ॥

हो पतित-पावन नाम हिम्मत न टुरे ।
जैसे किरन सूर सम पुरे ॥ टेक ॥
जैसे प्रीति प्रान अरु देँही । तैसे हरि जन परम सनेही १
जैसे प्रीति जला अरु मीना । तैसे सुरति निरति लौ लीना
जैसे पदुम‡ नाल बिच तागा । तैसे जीव ब्रह्म इक लागा ।३
जैसे कीट भृंग रँग जागा । तैसे आतम सौँ मन पागा ।४
जैसे भीखा फनि§ मनि लाय । तैसे दृष्टि सरूप समाय॥५॥

* पति । † मिल गये । ‡ कँवल । § साँप ।

॥ शब्द २१ ॥

निज आतम भजि लेहु तने, जैसे घरे तैसे बने ॥टेक॥
ज्ञान रत काम तज क्रोध थिर मने।
और बिषै तज निज रूप जने* ॥ १ ॥
गुरु गम जोग करै युक्ति सधने।
आपा आपु ही में उक्ति सयने ॥ २ ॥
आदि अंत मध एक व्यापक सघने।
माया परपंच झूँठ जक्त सपने ॥ ३ ॥
दीन के दयाल जन आरत समने।
केवल भक्ति माँगे भीखा छिन छिने ॥४॥

॥ शब्द २२ ॥

जान दे करौं मनुहरिया† हो ॥ टेक ॥
अनेक जतन करिके समझाऔं,
मानत नाहिं गँवरिया हो ॥ १ ॥
करत करेरी नैन बैन सँग,
कैसे के उतरब दरिया हो ॥ २ ॥
या मन तें सुर नर मुनि थाके,
नर बपुरा कित धरिया हो ॥ ३ ॥
पार भइलौं पिव पीव पुकारत,
कहत गुलाल भिखरिया हो ॥ ४ ॥

*जाने। †चिरौरी, खुशामद।

॥ शब्द २३ ॥

तू है जोगी जना ब्रह्म रूप लख जिव अपना ॥१॥
मैं नाहीं निज साहब आपै कछु इक फेर पर्यो इतना॥२॥
जोग जज्ञ तप दान नेम ब्रत सोवत साँच जगे सुपना॥३॥
सुख दुख भोग भोगत है जितने तितने पाप पुन्न तपना४
सतगुरु कह्यो बिचारि भेद मुख भीखा अजपा जप जपना ॥५॥

॥ शब्द २४ ॥

इक दिन मन देखल बौराइल ।
सास्तर अंग* सरूप लजाइल ॥ १ ॥
मेरी ओर न जोरत नैना ।
साबिक बचन बोलता बैना ॥ २ ॥
दसा उन्मत मतवाला जैसे ।
डगमग चित पग परता तैसे ॥ ३ ॥
चंचल चकित चहूं दिसि जावै ।
इत उत छिन छिन पल पल धावै ॥ ४ ॥
बिषया लंपट करत अधीना ।
तृस्नावंती सदा मलीना ॥ ५ ॥
जो कतहूं हरि चरचा सुनै ।
तजि माया परपंचहिं गुनै ॥ ६ ॥

*छः अंग कर के अर्थात सर्बांग ।

काम क्रोध मद गर्ब भुलाई।
लहवत* बुद्धि करत लरिकाई ॥ ७ ॥
सो तौ भली बेर नहिं पावै।
जो नहिं राम चरन चित लावै ॥ ८ ॥
थाको बेद बेदांत सिखाई।
भीखा के मन लाज न आई ॥ ९ ॥

॥ शब्द २५ ॥

नैन सेज निज पिय पौढ़ाई, सो सुख मौजै दिलहिं जनाई१
बोलता ब्रह्म आतमा एकै, भाव मिलन को सकै दुराई† २
अगम अगोचर अधर अकथ प्रभु, ता सँ कहौं
कौन मुँह लाई।३।
अंग अंग पर कोटि कोटि छबि, कहत सोभेदबेदसकुचाई
ईसुर की यह प्रगट इसुरता, भीखा ब्यापक रूप अघाई।५।

॥ शब्द २६ ॥

हे मन आतम सौं रति करन, ता तँ और सकल परिहरन
परमातम चेतन्य रूख‡ तन, रूप सुपकु§ फल फरन।
द्रष्टि बिहंग सुरति लेइ जावै, खात सुखद‖ दुख हरन २
आवत जात केतिक जुग यहि मग, समुझि कबहुं नहिं परन
भीखा दरद पराय¶ जाहि पर, कोर तनिक इक ढरन ३

*लाख सरीखी समझ जो गर्मी पा कर टिघल जाय और फिर कड़ी की कड़ी हो जाय। †छिपाना। ‡पेड़। §अच्छा पका हुआ। ‖सुखदाई। ¶भाग जाय।

॥ शब्द २७ ॥

हमरो मनुवाँ बड़ो अनारी ।
साहब निकट न करत चिन्हारी ॥ १ ॥
प्रानायाम न जुक्ति बिचारी ।
अजपा जाप न लावै तारी ॥ २ ॥
खोलै न भ्रम तैं बज्र किवारी ।
निज सरूप नहिं देखि मुरारी ॥ ३ ॥
प्रान अपान मिलन न सँवारी ।
गगन गवन नहिं सब्द उचारी ॥ ४ ॥
सुन्न समाधि न चेत बिसारी ।
यह लालसा* उर बड़ी हमारी ॥ ५ ॥
सर्ब दान गुरु दाता भारी ।
जाचक सिष्य सो लेत भिखारी ॥ ६ ॥

॥ शब्द २८ ॥

सब भूला किधौं हमहिं भुलाने ।
सो न भुला जा के आतम ध्याने ॥ १ ॥
सब घट ब्रह्म बोलता आही ।
दुनिया नाम कहौं मैं काही ॥ २ ॥
दुनिया लोक बेद मति थापे ।
हमरे गुरु गम अजपा जापे ॥ ३ ॥

*हौसला ।

हरि जन जे हरि रूप समावे ।
घमासान* भये सूर कहावे ॥ ४ ॥
कहे भीखा क्यौं नाहींनाहीं† ।
जब लगि साँच झूँठ तन माहीं ॥ ५ ॥

॥ शब्द २९ ॥

रे मन ह्वै है कवन गति मेरी ।
मेरी समझ बूझ होत देरी ॥ टेक ॥
यह संसार आये गति माया लागी धाये ।
राम नाम नहिं जान्यो मति गति न निबेरी ॥१॥
भजन करारे‡ आये कबहीं न साँचि गाये ।
करम कुटिल करे मति गइ तेरी ॥ २ ॥
भीखा चरनौं में लीजै मन माया दूरि कीजै ।
बार बार माँगै इहै प्रीति लागै तेरी ॥ ३ ॥

॥ शब्द ३० ॥

अधम मन राम नाम पद गहो ।
तातैं यह तन धरि निरबहो§ ॥ टेक ॥
अलख न लखि जाय अजपा न जपि जाय ।
अनहद के हद नाहीं हो ॥ १ ॥
कथनी अकथ कवनि बिधि होवे ।
जहँ नांहीं तहँ ताही हो ॥ २ ॥
बिन मूल पेड़ फल रूप सोई ।
निज़ दृष्टि बिन देखी कहो ॥ ३ ॥

*युद्ध । †नेत नेत । ‡इक़रार । §निर्बाह हो ।

बिन अकार को रूह नूर है।
अगिनि बिन भ्रम में दहो ॥ ४ ॥
बोलता है आपु माहीं आतमा है हम नाहीं।
अविगति की गति महो* ॥ ५ ॥
पूरन ब्रह्म सकल घट व्यापक।
आदि अंत भरिपूर रहो ॥ ६ ॥
सतगुरु सत दियो सुरति निरति लियो।
जीव मिलि पिय पहुंच हो ॥ ७ ॥
जन भीखा अब कारन छोड़ो।
तत्त पदारथ हाथ लहो ॥ ८ ॥

॥ शब्द ३१ ॥

उठ्यो दिल अनुमान हरि ध्यान ॥ टेक ॥
भर्म करि भूल्यो आपु अपान।
अब चीन्हो निज पति भगवान ॥ १ ॥
मन बच क्रम दृढ़ मत परवान।
वारो प्रभु पर तन मन प्रान ॥ २ ॥
सब्द प्रकास दियो गुरु दान।
देखत सुनत नैन बिनु कान ॥ ३ ॥
जा को सुख सोइ जानत जान।
हरि रस मधुर कियो जिन पान ॥ ४ ॥
निर्गुन ब्रह्म रूप निर्बान।
भीखा जल ओला गलतान†

*महा, बड़ी। †लीन।

॥ शब्द ३२ ॥

कियो क़रार भजन करतार ॥ टेक ॥
जनमत मरत अनेक प्रकार,
त्रसित* कउल पुनि बारंबार ॥ १ ॥
अबकी बार पायो छुटकार,
सुमिरन ध्यान धरो निरधार ॥ २ ॥
पायो सुभग मनुष अवतार,
पवन लगे भ्रमि भुलेउ बिचार ॥ ३ ॥
सुत दारा धन धाम पियार,
नफा कहाँ तँ मूल बिगार ॥ ४ ॥
जब गुरु खोलहिं बज्र किवार,
भीखा सो पहुंचे दरबार ॥ ५ ॥

॥ शब्द ३३ ॥

थाम्है मूल पवन को धीरा, जो नेकु गहै दिल धीरा ॥ १ ॥
दूजे अप तीजे तेज अपरबल, चौथे बायु तन पीरा ॥२॥
पँचयँ अकास छठे तम छोड़ो, सतयँ होइ मन थीररा॥३॥
अपरम्पार बस्तु की जागह, भीखा बोध फकीरा ॥ ४ ॥

॥ शब्द ३४ ॥

मन चाहत दृष्टि निहारी ।
सुरति निरति अंतर लै जावो निज सरूप अनुहारी ॥१॥
जोग जुक्ति मिलि परखन लागो पूरन ब्रह्म बिचानी ।
पुलकि पुलकि आपा महँ चीन्हत देखत छबि उँजियारी२।

*डरा हुआ ।

सुखमन के घर आसन माँड़ो इँगल पिँगलहिँ सुढारी।
सुन्न निरंतर साहब आपे सब घट सब तेँ न्यारी ॥ ३ ॥
प्रेम प्रीति तन मन धन अरपो प्रभुजी की बलिहारी।
गुरु गुलाल कै चरन कमल रज लावत माथ भिखारी ॥४॥

॥ शब्द ३५ ॥

जन मन मनहीं मँ धुनि लाई ॥ टेक ॥

गुरु प्रताप साधु की संगति, नाम पदारथ सुनि पाई॥१
सुनत सुनत मन मगन भयो है, फागु सोहावन घर आई२
तन मन प्रान ताहि पर वारो, रहो चरन मँ लपटाई ३
भीखा अत्र के दाँव तुम्हारो, मन चित दै हरिहीं गाई४

॥ शब्द ३६ ॥

करै पाप पुन्न की लदनी, जग ख्याल हो जग ख्याल हो ॥१॥
लागो हासिल कर्म हैवान,
टूटो परत नहीं कछु फाजिल, जन्मत मरत निदान।
जग ख्याल हो जग ख्याल हो ॥ २ ॥
त्यागि भजै हरि नामहीं, हिये प्रीति मन आन।
जोग जुक्ति मन लावे मेरवै* प्रान अपान।
जग ख्याल हो जग ख्याल हो ॥ ३ ॥
गगन गवन करि जाती तेहिं बिच परल उद्यान†,
सुधि बुधि सबही हरि लियो करब कवन बिधि ध्यान।
जग ख्याल हो जग ख्याल हो ॥ ४ ॥

*मिलावै। †ख्वाँस का नाम।

नाद अनाहद बाजल उह सब्द सुनो बिनु कान,
पुलकि भयो जिय ताहि छिन उदै भयो ब्रह्मज्ञान।
जग ख्याल हो जग ख्याल हो ॥ ५ ॥
आतम राम निरामय अलख पुरुष निरबान,
भीखा ता छवि देखत सो केहि मुख करौं बयान।
जग ख्याल हो जग ख्याल हो ॥ ६ ॥

॥ शब्द ३७ ॥

सांधो भाई सब महँ निज पहिचानी।
जग पूरन चारिउ खानी ॥ टेक ॥
अविगति अलख अखँड अनमूरति, कोउ देखे गुरुज्ञानी १
ता पद जाइ कोऊ कोउ पहुंचे, जोग जुक्ति करि ध्यानी ॥२॥
भीखा धन्य जो हरि सँग राते, सोई हैँ साधु परानी ॥ ३ ॥

॥ शब्द ३८ ॥

राम से करु प्रीति अब के राम से करु प्रीति,
हे मन ॥ १ ॥
राम बिना कोउ काम न आवे, अंत ढहेगी भीति,
यह तन ॥ २ ॥
बूझि बिचारि देखु जिय अपने, हरि बिन नहिं कोउ हीत,
यह बन ॥ ३ ॥
गुरु गुलाल कै चरन कमल रज, धरु भीखा उर चीत,
यह धन ॥ ४ ॥

॥ शब्द ३९ ॥

संतो चरन कमल मन बसले हो ।
ताते जन सरनागति रस ले हो ॥ टेक ॥

गुरु प्रताप साध की संगति जोग जुक्ति उर लसले हो ॥१॥
भीखा हरि पद चहै समाने सब्द सरोवर धसले हो ॥ २ ॥

॥ शब्द ४० ॥

जोग जुक्ति परखन लगो, समुझत वार न पार ॥ १ ॥
नेकु दृष्टि नहिं आवई, जिउ पर परल खँभार ॥ २ ॥
उबि उबि घुमि घुमि उलटि गयो मन, सुनि धुनि
चढ़ल पहार ॥ ३ ॥
सुन्न सिखर पर जाइ रह्यो है, खुलि सब भरम किवार ॥४
बासर पूरन* चंद उगो है, अचरज निज रूप हमार ॥५॥
ज्ञान ध्यान तहवाँ लगो है, भीखा गुरु चरन अधार ॥६॥

॥ शब्द ४१ ॥

मन करिले नाम भजन दम दम ॥ टेक ॥

जुग बरस मास दिन पहर घरी छिन, छीजै करो
किरति जम जम ॥ १ ॥
आतम राम प्रगट निज ता को, तन मन अर्पन कीजै,
ब्यापकं सम सम ॥ २ ॥
सतगुरु कह्यो सुभ्राय जवनि बिधि, दृष्टि रूप जल भींजै,
मिलन ग्राम गम ॥ ३ ॥

*पूरनमासी का दिन ।

होइ एकांत सुतंत्र बैठि कै, अनहद धुनि सुनि लीजै,
बाजत झमझम ॥ ४ ॥

भीखा धन्य जो त्यागि जक्त सुख, हरि को रस मद पीवै
अस जन कम कम ॥ ५ ॥

॥ शब्द ४२ ॥

आसिक तूँ यारे, खोजो मासूक हरि प्यारे ॥टेक॥
आसिक यारे सब सौं न्यारे, निकटहिं अपरंपारे ॥१॥
आसिक यारे बहुत पुकारे, हे पिय पिय पपिहा रे ।
आसिक यारे स्वाँति अधारे, चात्रिक तन मन वारे ॥२॥
आसिक यारे काज सँवारे, मिलो प्रभु प्रान हमारे ।
भीखा यारे एक बिचारे, भ्रम कपटहिं परच* उघारे ॥३॥

॥ शब्द ४३ ॥

मोहिं कहो आपनो सेवक ॥ टेक ॥
हिय जिय नैन स्रवन नासा सिर, अछय पुरुष तुम देवक॥१॥
जेहि चाहो भव तेँ काढ़न है, कनहरिया† गुरु खेवक ॥२॥
भूखो नैन रूप को चाहत, मिलनि सकल रस मेवक‡ ॥३॥
भीखा अपरंपार तुमहिं अस, कौन भजन करि लेवक॥४॥

*तह, ग़िलाफ़ । †पतवार पकड़ने वाला । ‡मेवा ।

॥ ककहरा ॥

(१)

भजि लेहु सुरति लगाय, ककहरा नाम का ॥ टेक ॥
क–काया में करत कलोल, रैनि दिनि सोहं बोलै ।
ख–खोजै जो चित लाय, भरम को अंतर खोलै ॥१॥
ग–ग्यान गुरू दाया कियो, दियो महा परसाद ।
घ–घुँमड़ि घहरात गगन में, घटा अनाहद नाद ॥२॥
न–नैन सोँ देखो उलटि कै, ठाकुर को दरबारी ।
च–चमतकार वह नूर, पूर संतन हितकारी ॥ ३ ॥
छ–छिन माँ भनि तिन* कर्म गयो है, जीव ब्रह्म के पास।
ज–जैजै सब्द होत तिहुं पुर में, सुद्ध सरूप अकास ॥४॥
झ–झकोरि झपाक झपटि, नर समय गँवाई ।
न–नहिं समुझत निज मूल, अंध ह्वै दृष्टि छिपाई ॥५॥
ट–टँड† संकट में ग्रसित है, सुत दारा रहसाई‡ ।
ठ–ठठाय मुसकाय हँसतु है, मनहुं परल निधि§ पाई॥६॥
ड–डाँवाँडोल का फिरहु, नेकु तुम समुझहु भाई ।
ढ–ढरके जबही‖ बुंद, बपू¶ की खबरि न पाई ॥७॥
न–नमो नमो चरनन नमो, धरो नाम कै ओट ।
त–तंत** माल सब राखि लीजिये, कबहुं परत नहिं टोट८
थ–थकित भयो थहराय, ज्ञान जब हिरदे आया ।
द–दरकि†† हिये बहु जीव, ब्रह्म में आनि समाया ॥९॥

*तीन । †झगड़ा । ‡बिलास करता है । §पड़ा हुआ धन । ‖जब जीव निकल गया । ¶शरीर । **तत्व । ††धड़क कर ।

घ-घक्का सब को सहै, जपै सो अजपा जाप ।
न-निबहि जाय सो संत कहावे, जाके भक्ति प्रताप ॥१०॥
प-परमेसुर प्रगट, आपु में आपु छिपाय ।
फ-फाजिल जो होय, सोइ यह मतिहिं समाय ॥११॥
ब-बायँ बस्ती नगर, तजै एक ही बार ।
भ-भय भव भटका भरम निवारै, केवल सत्त अधार ॥१२॥
म-माया परपंच, पाँच में भरमत रहई ।
य-यन्मत* अरु मरत, देँह को अंत न लहई ॥१३॥
र-रमता घट घट बसै, तेहिं काहे नहिं जान ।
ल-लै लाय जो ताहि पुरुष सौं, पावै पद निर्बान ॥१४॥
व-वावागवन† न होय, पुरुष पुरुसोतम जाने ।
श-समुझै कोउ संत, सोई यह भेद समाने ॥ १५ ॥
ष-षट्ट ज्ञान अमान लियो है, कियो बिचार को धार ।
स-संसय काठ कठंगरा, ता सौं काटत लगे न बार ॥१६॥
ह-हक्क हलालहिं सिदिक‡ समुझि हराम न खावै ।
छ-छिमा सील संतोष, सहज में जो कछु आवै ॥१७॥
अइ एउ§ गुरु गुलाल जी, दियो दान समुदाय ।
जाचक भीख भीखानँद पायो, आतम लियो दरसाय ॥१८॥

*जन्मत । †आवागवन । ‡जाइज़ । §आयौ ।

अलिफ़नामा

बिनु हरि कृपा न होय ककहरा ज्ञान का ॥टेक॥
अलिफ–अलाह अभेद सुरति जद मुर्सिद देवे ।
बे–बहकै नहिं दूर निकटहीं दरसन लेवे ॥ १ ॥
ते–ते व्यापक सकल है जल थल बन गृह छाइ ।
सै–से आप मासूक बनो है कोउ आसिक दरसाइ ॥२॥
जीम–जबून है जहर जक्त को भोग सुभ्कारी ।
हे–हक्क न समुझत नान करम सौं करत खुवारी ॥३॥
खे–खिन खिन मन रहत है माया के परपंच ।
दाल–दंभ निग्रह नहीं* कस पावे सुख संच ॥ ४ ॥
जाल–जाल फाँस नर फँस्यो आपु तेँ आपु बझाये ।
रे–ररंकार निरधार जन हीं सहज छुटाये ॥ ५ ॥
जे–जहूर वह नूर देखि जिय आनन्द बिलास ।
सीन–संसै तम छूटि गयो है ता पद लियो निवास ॥६॥
शीन–सनै सनै† वह प्रेम प्रीति परमारथ लागै ।
साद–साधना सधै जुक्ति सौं अनुभौ जागै ॥ ७ ॥
जाद–जाती नाम भयो सब बिधि पूरन काम ।
तो–तेज पुंज तपवत चहुं जुग ऐसो प्रभु को नाम ॥ ८ ॥
जो–जो मौजै करै पाप अरु पुन्न न लेखै ।
ऐन–ऐन लेय जद हाथ रूप निज साहब देखै ॥ ९ ॥
गैन–ग्यान उद्वैत भयो है सतगुरु के परताप ।
फे–फहमंदा‡ भजन को दिव्य दृष्टि को जाप ॥ १० ॥

*कपट को दूर नहीं किया । †धीरे धीरे । ‡जानकार, भेदी ।

क़ाफ़–कहर है लाफ़* झूठ की तजिये आसा ।
काफ़–कमाल करार सत्त को जूह निरासा ॥ ३ ॥
लाम–लाहुत† सुठि‡ सिखर है दूरिहुं तैं बहु दूर ।
मीम–मरजीवा ह्वै रहै सोइ पावै दरस हजूर ॥ ४ ॥
नूँ–नूतन‡ छवि देइ ढुरुहुरा§ सुंदर राजै ।
वाव–वाहै वाह सो अहै बचन मुख कहत न छाजै ॥ ५ ॥
हे–हद बेहद इक सम भयो मध्य बोलता आहि ।
लाम अलिफ़–सो निकटहिँ पावो चित दै चितवहु ताहि॥६
हमजा–हम हमार द्वैत तहँ नाहिन सोहै ।
ये–येक तत्त ह्वै ज्ञान ध्यान तब जन्म न मोहै ॥ ७ ॥
तीनि आँक मैं बस्तु सकल है रज तम सत सम ईस ।
भीखा नाम सुन्न‖ जब दीन्हो तब भयो अच्छर तीस ॥ ८ ॥

॥ पहाड़ा ॥

एका एक मिले गुर देवा, सिष सोई जो लावे सेवा ।
तन मन वार चरन चित धारा, एक दहाई दसवैं द्वारा॥१॥
दूआ दुई द्वैत जो तजै, जोग जुगति मिलि आपा भजै¶ ।
सुरति बिचारि निरति पहँ गयऊ, दुइ पर सुन्न
बीस गुन भयऊ ॥ २ ॥
तीया तीनि ताप जब मेटे, तबही जीव नरायन भैंटे ।
मक्का** मदीना** घटमैं खोजा, तीन दहाई तीसो रोजा॥३

---

*गप । †त्रिकुटी । ‡सुंदर । §थरहरा । ‖सिफ़र । ¶भागे, दूर हो ।
**मुसलमानों के तीर्थ ।

चौथे चार खानि हैं जेते, सब घट ब्रह्म बोलता तेते।
घाटि*कहूं नहिँ हाल हजूरा, चार दहाई चालिस पूरा॥४॥
पचयँ पाँचो मुद्रा साधे, ससि और सूर अकासे बाँधे।
प्रानायाम पवन परगासा, पाँच सुन्न पर भयो पचासा॥५॥
छठयँ चक्र कठिन मति वाही, जे निबहे जेहि राम निबाही
चढ़ै पवन ऊरधमुख भाठी, छः दहाई तिह पर साठी॥६॥
सतयँ सब्द अनाहद बाजा, तूर सुनत मनुआँ भयो राजा।
रैयत बंध अमल बरजोरा, सात दहाई सत्तर चोरा॥७॥
अठयँ अष्ट कमल दल फूला, जोति रूप लखि जियँरा भूला।
उदित भये परगासित ज्ञाना, आठ दहाई अस्सी भाना ८
नौवँ नाम निरंजन जोती, सहज समाधि जासु की होती।
सो जानै जो जावै तहवाँ, नव दहाई नब्बे जहवाँ॥९॥
दसयँ दसो दिसा मेँ मेला, भीखा ब्रह्म निरंतर खेला।
दसँ दहाई अजपा जाप, बढ़ै दस गुना गुन परताप॥१०॥
जो कोइ नाम पहाड़ा पढ़ै, प्रेम प्रीति दस गूना बढ़ै॥११॥

॥ कुंडलिया ॥

(१)

जीव कहा सुख पावई बेमुख बहु घर माहिँ॥
बेमुख बहु घर माहिँ एक तेँ एक अपर्बल।
तेहू तेँ हैं अधिक अधिक तेँ अधिक महाबल॥

*कमी।

तेहिं में मन अरु पवन त्रिगुन कै डोरि लगाई।
बाँधे सब जग जाल छुटै कोऊ नहिं पाई॥
जौ भीखा सुमिरै राम को तौ सकल अर्थ होइ जाहि।
जीव कहा सुख पावई बेमुख बहु घर माहिँ॥

(२)

राम रूप को जो लखै सो जन परम प्रबीन॥
सो जन परम प्रबीन लोक अरु बेद बखानै।
सतसंगति में भाव भक्ति परमानँद जानै॥
सकल बिषय को त्यागि बहुरि परबेस* न पावै।
केवल आपै आपु आपु में आपु छिपावै॥
भीखा सब तेँ छोट होइ रहै चरन लवलीन।
राम रूप को जो लखै सो जन परम प्रबीन॥

(३)

जौ भल चाहो आपनो तौ सतगुरु खोजहु जाइ॥
सतगुरु खोजहु जाइ जहाँ वै साहब रहते।
निसि दिन इहै बिचारि सदा हरि को गुन कहते॥
समुझै बूझि बिचारि कै तन मन लावै सेव।
कृपा करहिं तब रीझि कै नाम देहिं गुरुदेव॥
भीखा बिछुरे जुगन के पल महँ देहिं मिलाइ।
जौ भल चाहो आपनो तौ सतगुरु खोजहु जाइ॥

*दखल।

(४)

जज्ञ दान तप का किये जौ हिये न हरि अनुराग ॥
हिये न हरि अनुराग पागि मन बिषै मिठाई ।
जग परपंच में सिद्ध साध्य मानो नव निधि पाई ॥
जहाँ कथा हरि भक्ति भक्त कै रहनि न भावै ।
गुनना गुनै बेकाम झूँठ मैं मन सुख पावै ॥
भीखा राम जाने बिना लगो करम माँ दाग ।
जज्ञ दान तप का किये जौ हिये न हरि अनुराग ॥

(५)

मन क्रम बचन बिचारि कै राम भजे सो धन्य ॥
राम भजे सो धन्य धन्य बपु* मंगलकारी ।
राम चरन अनुराग परम पद को अधिकारी ॥
काम क्रोध मद लोभ मोह की लहरि न आवै ।
परमातम चेतन्य रूप महँ दृष्टि समावै ॥
व्यापक पूरन ब्रह्म है भीखा रहनि अनन्य ।
मन क्रम बचन बिचारि कै राम भजै सो धन्य ॥

(६)

दृढ़ निस्चै हरि को भजै होनी होइ सो होइ ॥
होनी होइ सो होइ निंदवै भावै कोई ।
अहित करै अपमान मान तहँ चहै न वोई ॥

*शरीर

दुर्बचन बहुत मुख पर कहै हठ करि करै बिषाद ।
सो नहिं लावै आपु पर जन ता को रखु मरजाद ॥
परै सो ओढ़ै सीस पर भीखा सनमुख जोइ ।
दृढ़ निस्चै हरि को भजै होनी होइ सो होई ॥

(७)

धनि सो भाग जी हरि भजै ता सम तुलै न कोइ ॥
ता सम तुलै न कोइ होइ निज हरि को दासा ।
रहै चरन लौलीन राम को सेवक खासा ॥
सेवक सेवकाई लहै भाव भक्ति परवान ।
सेवा को फल जोग है भक्त बस्य भगवान* ॥
केवल पूरन ब्रह्म है भीखा एक न दोइ ।
धन्य सो भाग जो हरि भजै ता सम तुलै न कोइ ॥

(८)

धरि नर तन हरि नहिं भजै पसु सम करै बिहार ॥
पसु सम करै बिहार मुरख जानै नहिं काज अकाज ।
बृषभ† सदृस कामी बड़ा इंद्री सहित समाज ॥
जड़ सरीर नर बुद्धि नहिं इनके सींग न पौंछ ।
खाहिं पेट भरि सोवहीं जानहिं अगति न मोछ‡॥
(भीखा) धृग ज़ीवन धृग जन्म है धृग लीन्हौं अवतार ।
धरि नर तन हरि नहिं भजै पसु सम करै बिहार ॥

*सेवा का फल मेला है क्यौंकि भगवान भक्त के बस में हैं।
†साँड़। ‡कुगति और मुक्ति में भेद नहीं समझते ।

(९)

यह तन अयन* सरूप हरि कुंजी सतगुरु पास ॥
कुंजी सतगुरु पास कृपा करि खोलहिं जबहीं ।
बूझहिं जेहि अधिकार बस्तु देखलावहिं तबहीं ॥
जड़ि ताला बज्र कपाट को तहँ बैठे आतम राम ।
देखे सुने की गम नहीं नहिं आँखि कान को काम॥
भीखा प्रीति प्रतीति धरु करु इष्ट बचन बिस्वास ।
यह तन अयन सरूप हरि कुंजी सतगुरु पास ॥

(१०)

मन लागो गोबिंद सौं छोड़ि सकल भ्रमफाँस ॥
छोड़ि सकल भ्रमफाँस आस नहिं काहु की करते ।
यह माया परपंच ताहि महँ रहते डरते ॥
केवल ब्रह्म प्रकास मौं गुरु आप कह्यो करि सैन ।
छुटै सकल मन कामना सब्द रूप भयो ऐन ॥
भीखा मन बच कर्मना इक भक्तन कै आस ।
मन लागो गोबिंद सौं छोड़ि सकल भ्रम फाँस ॥

(११)

जुक्ति मिले जोगी हुआ जोग मिलन को नाम ॥
जोग मिलन को नाम सुरति जा मिलै निरति जब ।
दिब्य दृष्टि संजुक्त देखि के मिलै रूप तब ॥
जीव मिलै जा पीव को पीव स्वयं भगवान ।
तब सक्ति मिलै जा सीव को सीव परम कल्यान ॥

* घर ।

भीखा ईसुर की कला यह ईसुरताई काम।
जुक्ति मिले जोगी हुआ जोग मिलन को नाम॥

(१२)

सहजहिं दृष्टि लगी रहै तेहि कहिये हरिदास॥
तेहि कहिये हरिदास आस जेहि दूसर नाहीं।
सहजहिं कियो बिचार जाय रहि सतगुरु पाहीं॥
सीस चढ़ायो ताहि को हलुक भयो देइ भार।
टहल करे मुख देखि रुख साहब परम उदार॥
भीखा रीझै कृपा करि देवै रूप प्रकास।
सहजहिं दृष्टि लगी रहै तेहि कहिये हरिदास॥

(१३)

पाहुन आयो भाव सौं घर में नहीं अनाज॥
घर में नहीं अनाज भजन बिनु खाली जानो।
सत्य नाम गयो भूल झूठ मन माया मानो॥
महा प्रतापी राम जी ताको दियो बिसारि।
अब कर छाती का हनो* गयो सो बाजी हारि॥
भीखा गये हरि भजन बिनु तुरतहिं भयो अकाज।
पाहुन आयो भाव सौं घर में नहीं अनाज॥

(१४)

बेद पुरान पढ़े कहा जौ अच्छर समुझा नाहिं॥
अच्छर समुझा नाहिं रहा जैसे का तैसा।
परमारथ सौं पीठ स्वारथ सन्मुख होइ वैसा॥

*अब हाथ से छाती कूटने से क्या होता है।

सास्तर मति को ज्ञान करम भ्रम में मन लावै।
छुइ न गयो बिज्ञान परम पद को पहुंचावै ॥
भीखा देखे आपु को ब्रह्म रूप हिये माहिं।
बेद पुरान पढ़े कहा जौ अच्छर समुझा नाहिं ॥

(१५)

राम भजे दिन घरी इक जीवन का फल सोइ ॥
जीवन का फल सोइ मगन मन हरि जस गावै।
परमातम चेतन्य रूप आपा दरसावे ॥
जोग पपील* के। मत कठिन अंध धुंध दरबार।
सोहं सन्मुख सहज घर मत बिहंग निरधार ॥
भीखा त्रैगुन गुनन के बस्य परा सब कोइ।
राम भजे दिन घरी इक जीवन का फल सोइ ॥

(१६)

राम भजन को कौल किये। दिन ऐसहि ऐसहि जात।
ऐसहि ऐसहि जात चेत नहिं करंत अनारी।
लोक लाज कुल कानि† मानि हरि नाम बिसारी ॥
अपने मनै सपूत सूर अति से बल भारी।
जनिहै बिते दिन चारि काल सिर मुगदर मारी ॥
भीखा समुझत गर्भ बास दुख थरथर कंपत गात।
राम भजन को कौल किये। दिन ऐसहि ऐसहि जात ॥

*चींटी। †प्रतिष्ठा।

(१७)

सुत कलित्र* धन धाम सुख मानो सुपना को
सो साँच ॥
सुपना को सो साँच मानि ता को पतियाना।
कहा रह्यो का भयो समुझि नहिं करत अयाना† ॥
ज्यौं पवन उदक‡ भँवरी दियो कहै बवंडर भूत।
बढ़ो बहुत फिरि मिटि गयो कोउ न रहा इत ऊत ॥
जो भीखा जाने राम को तेहि झूँठ लगत मत पाँच।
सुत कलित्र धन धाम सुख मानो सुपना को
सो साँच ॥

(१८)

चलनी को पानी पड़ो बरहा§ कभी न होइ ॥
बरहा कभी न होइ भजन बिनु ध्रिग नर देँहीं।
झूँठ परपंच मन गह्यो तज्यो हरि परम सनेही ॥
ज्यौं सुपने लागी भूख अन्न बिनु तन मरि जाही।
कबहीं के उठे जाग हरख कहुं बिसमै नाहीं ॥
(भीखा) सत्य नाम जाने बिना सुख चाहे जो कोइ।
चलनी को पानी पड़ो बरहा कभी न होइ ॥

*स्त्री। †नादान। ‡पानी। §नहर।

॥ साखी ॥

॥ भेष रहनी ॥

काया कुंड बनाइ कै घूमि घोटना* देइ ।
बिजया† जीव मिलाइ कै निर्मल घौंटा‡ लेइ ॥१॥
साफी§ सहज सुभाव को छानो सुरति लगाय ।
नाम पियाला छकि रहै अमल उतरि नहिं जाय ॥२॥
जोग जुक्ति सुमिरन बनो हर दम मनिया‖ नाम ।
करम खंडि कंठी गुहो गर बाँधो प्रानायाम ॥३॥
अगम ज्ञान गूदर लियो ढाँको सकल सरीर ।
ब्रह्म जनेऊ मेखला पहिरहिं मस्त फकीर ॥४॥
सेल्ही संसय नासि कै डारो हृदय लगाय ।
तिलक उनमुनी ध्यान धरि निज सरूप दरसाय ॥५॥
ताखी¶ तत्त जो माल** है राखो सीस चढ़ाय ।
चरन कमल निरखत रहो मौजै मौज समाय ॥६॥
तूमा†† तन मन रूप है चेतनि आब‡‡ भराय ।
पीवत कोई संत जन अमृत आपु छिपाय ॥७॥
कुबरी§§ पानी‖‖ अंग भो पवन दंड बरजोर ।
लागी डोरी प्रेम की तम मेटो भयो भोर ॥८॥
पौवा¶¶ अधर अधार को चलत सो पाँव पिराय ।
जो जावे सो गुरु कृपा कोउ कोउ सीस गँवाय ॥९॥

---

*घुमाय के घोटै । †भाँग । ‡घूंट । §छन्ना । ‖माला का दाना । ¶साधुआँ की टोपी । **माला । ††तुंबा । ‡‡पानी । §§छड़ी, बैरागिन । ‖‖पानि=हाथ । ¶¶खड़ाऊँ ।

मुरछल मन उनमान का छाया ज्ञान अकार ।
उष्न* ताप निस दिन सहै केवल नाम अधार ॥१०॥
अर्ध उर्ध के बीच में कमरबस्त† ठहराय ।
इँगला पिँगला एक है सुखमन के घर जाय ॥११॥
झोरी मौज अनयास‡ की बटुआ आनँद§ लेय ।
मृगछाला त्रिकुटी भई बैठि सब्द चित देय ॥१२॥
सकल संत के रेनु§ लै गोला गोल बनाय ।
प्रेम प्रीति घसि ताहि को अंग बिभूति लगाय ॥१३॥
भिच्छा अनुभव अन्न ले आतम भोग बिचार ।
रहै सो रहनि अकासवत बरजित जानि अहार ॥१४॥
जटा बढ़ावे भाव की जब हरि कृपा अमान ।
मुद्रा नावै नाम की गुरु सब्द सुनावै कान ॥१५॥
आड़बंद‖ हर हाल की अलफी¶ रहनि अडोल ।
बाघम्बर** है सुन्न का अविगत करत कलोल ॥१६॥
पाँच पचीस धुईं लगी धीरज कुंड भराय ।
ज्ञान अगिन ता में दियो बिषय इन्हन†† जरि जाय॥१७॥
फाहुलि‡‡ अगम अचिंत की चीपी§§ ध्यान लगाय ।
नूर जहूर झलकत रहै ता में मन अरुझाय ॥१८॥
भेख अलेख अपार है कहत न ज्ञान समाय ।
सुन्न निरंतर अलख है खोज करै कोउ जाय ॥१९॥

*गरमी । †कमरबंद । ‡आसा से रहित । §धूल । ‖लँगोट । ¶बिना बँहोली का कुरता । **शेर के चमड़े का बस्त्र । ††इँधन । ‡‡फरुही । §§नाप का कटोरा ।

साहब सब घट रमि रहो पूरन आपै आप ।
भीखा जो नहिं जान ही सहै करम संताप ॥२०॥

॥ ब्राह्मन या ब्रह्म ज्ञानी रहनी ॥

ब्राह्मन कहिये ब्रह्म-रत ब्रह्म मई को ज्ञान ।
ब्रह्म गायत्री जाप करि ब्रह्म रूप पहिचान ॥२१॥
ब्रह्म जनेऊ मेखला ब्रह्म कमंडल दंड ।
ब्रह्म भोग भिच्छा लिये ब्रह्मै आसन मंड ॥२२॥
ब्राह्मन कहिये ब्रह्म-रत है ता का बड़ भाग ।
नाहिँ त* पसु अज्ञानता गर डारे तिन ताग† ॥२३॥
संत चरन में लगि रहे सो जन पावे भेव ।
भीखा गुरु परताप तें काढ़ेव कपट जनेव ॥२४॥

॥ संत महिमा ॥

संत चरन में जाइ कै सीस चढ़ायो रेनु‡ ।
भीखा रेनु के लागते गगन बजायो बेनु ॥२५॥
बेनु बजायो मगन ह्वै छुटी खलक की त्रास ।
भीखा गुरु परताप तें लियो चरन में बास ॥२६॥

॥ मिश्रित ॥

जोग जुक्ति अभ्यास करि सोहं सब्द समाय ।
भीखा गुरु परताप तें निज आतम दरसाय ॥२७॥
नाम पढ़े जो भाव सों ता पर होहिँ दयाल ।
भीखा के किरपा कियो नाम सुदृष्टि गुलाल ॥२८॥

* नहीं तो । † तीन तागा अर्थात जनेऊ । ‡ धूल ।

जाप जपै जो प्रीति सौं बहु बिधि रुचि उपजाय।
साँझ समय औ प्रात लगु तत्त पदारथ पाय ॥२९॥
राम को नाम अनंत है अंत न पावे कोय।
भीखा जस लघु बुद्धि है नाम तवन सुख होय ॥३०॥
एक संप्रदा सब्द घट एक द्वार सुख संच।
इक आतम सब भेष मौं दूजो जग परपंच ॥३१॥
भीखा भयो दिगम्बर* तजि कै जक्त बलाय।
करुत† करो निज रूप को जहँ को तहाँ समाय ॥३२॥
भीखा केवल एक है किरतिम भयो अनंत।
एकै आतम सकल घट यह गति जानहिं संत ॥३३॥
एकै धागा नाम का सब घट मनिया माल।
फेरत कोई संतजन सतगुरु नाम गुलाल ॥३४॥
आरति हरि गुरु चरन की कोइ जाने संत सुजान।
भीखा मन बच, करमना ताहि मिलै भगवान ॥३५॥
आरति बिनवै ब्रह्म को केवल नाम निहोर।
बारम्बार प्रनाम करु गुरु गोबिंद की ओर ॥३६॥

*साधू जो नंगे रहते हैं। †क़स्द=इरादा।

पाठक महाशयों की सेवा में प्रार्थना है कि इस पुस्तक-माला के जो दोष उन की दृष्टि में आवैं उन्हें हमको कृपा करके लिख भेजैं जिस में वह दूसरे छापे में दूर कर दिये जावैं और जो दुर्लभ ग्रंथ संतबानी के उन को मिलें उन्हें भेज कर इस परोपकार के काम में सहायता करें।

यद्यपि ऊपर लिखे हुए कारनों से इन पुस्तकों के छापने में बहुत व्यय होता है तौ भी सर्ब साधारन के उपकार हेतु दाम आध आना फ़ी आठ पृष्ठ से अधिक किसी का नहीं रक्खा गया है। जो लोग सबसक्रैबर अर्थात पक्के गाहक होकर कुछ पेशगी जमा कर देंगे जिस की तादाद दो रुपये से कम न हो उन्हें एक चौथाई कम दाम पर जो पुस्तकें आगे छपैंगी बिना माँगे भेज दी जायँगी यानी रुपये में चार आना छोड़ दिया जायगा परंतु डाक महसूल उन के ज़िम्मे होगा और पेशगी दाम न देने की हालत में वी० पी० कमिशन भी उन्हें देना पड़ेगा। जो पुस्तकें अब तक छप गई हैं (जिन के नाम आगे लिखे हैं) सब एक साथ लेने से भी पक्के गाहकों के लिये दाम में एक चौथाई की कमी कर दी जायगी पर डाक महसूल और वी० पी० कमिशन लिया जायगा।

अब दरिया साहब बिहार के महात्मा और ग़रीबदास पंजाब के महात्मा की बानी हाथ में ली गई हैं।

प्रोप्रैटर, बेलवेडियर छापाख़ाना,

अकतूबर, १९०९ ई०

इलाहाबाद।

संतबानी पुस्तक-माला

तुलसी साहब (हाथरस वाले) की शब्दावली और जीवन-चरित्र ...	२)
,, ,, ,, रत्न सागर मय जीवन-चरित्र ..	॥=)
कबीर साहब की शब्दावली और जीवन-चरित्र, भाग १	।≡)
[दूसरा एडिशन विशेष शब्दों के साथ ॥)]	
,, ,, शब्दावली भाग २	॥=)
,, ,, अखरावती	।)
पलटू साहब की शब्दावली (कुंडलिया इत्यादि) और जीवन-चरित्र, भाग १	॥)
,, ,, शब्दावली, भाग २	।-)॥
धरनदासजी की बानी और जीवन-चरित्र, भाग १ ...	॥)॥
,, ,, भाग २	।≡)॥
रैदासजी की बानी और जीवन-चरित्र	।-)॥
जगजीवन साहब की बानी और जीवन-चरित्र, भाग १ ...	॥-)
दरिया साहब (मारवाड़ वाले) की बानी और जीवन-चरित्र, दूसरा एडिशन, कितनेही अधिक पदों और साखियों के साथ	।)॥
भीखा साहब की शब्दावली और जीवन-चरित्र	।≡)
सहजोबाई की बानी और जीवन-चरित्र	।)
दयाबाई की बानी और जीवन-चरित्र	=)॥
गुसाईं तुलसीदासजी की बारहमासी	)॥
अहिल्याबाई का जीवन-चरित्र भी अंग्रेज़ी पद्य में छपा है (यह रमनीय पुस्तक एक मेम ने लिखी है संतबानी पुस्तक-माला की नहीं है)	=)

मूल्य में डाक महसूल व वाल्यू पेएबल कमिशन शामिल नहीं है।

मनेजर, बेलवेडियर प्रेस,
इलाहाबाद।